समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

संसार को उल्लास व उमंग प्रदान करने वाला वसंतोत्सव आप सभी का जीवन ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करे ऐसी शुभकामनाएँ।.
–नाद अनुसंधान ट्रस्ट

संस्करण–नवम् **माह–फरवरी**
Edition -IX Month- February

किसान आंदोलन या आतंकवाद

विगत वर्ष २०२०से प्रारंभ किसान आंदोलन जो सरकार द्वारा बनाए नए कृषि कानूनों को रद्द करने के उद्देश्य से आरंभ हुआ, आज आतंक और विदेशी साजिशों से पूर्णतः ग्रसित जान पडघ्ता है। स्पष्ट रूप से यह दिखाई दे रहा है कि विदेश में रह रहे खालिस्तान समर्थक कट्टरपंथी आतंकवादी सोशल मीडिया के माध्यम से और अन्य परोक्ष माध्यम से इस आंदोलन का संचालन कर रहे हैं। ऐसा कहना हमारी विवशता इसलिए है कि एक तरफ से सरकार के कृषि कानून के विरोध में आंदोलन किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर 26 जनवरी 2021 के गणतंत्र दिवस के दिन सरकार से अपनी मांगों को मनवाने के हक में दिल्ली के तीन बॉर्डरो गाजीपुर बॉर्डर, सिंधु बॉर्डर और टिकरी बॉर्डर पर शांतिपूर्ण आंदोलन करने का आश्वासन देने वाले आंदोलनकारियों ने ट्रैक्टर मार्च के नाम पर दिल्ली की सडघ्कों पर जो रक्त रंजित तांडव किया उसे पूरा देश देख रहा है। यहां हम चित्रों के माध्यम से भी आतंक के इस खेल को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। भारत एक कृषि प्रधान देश है विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र हमारा देश भारत तथा यहां सत्तारूढ लगभग सभी पार्टियां किसानों के हित तथा उनकी आमदनी में बढघेतरी के लिए यथा संभव प्रयास अवश्य करती है। किसानों को अन्नदाता माना जाता है और देश का समस्त जनसाधारण उनके श्रम का सम्मान भी करता है। परंतु दिल्ली की सडघ्कों पर जिस प्रकार सार्वजनिक संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया गया, सुरक्षाकर्मियों को मारा पीटा गया। इस आतंक ने तो इतना उग्र रूप धारण कर लिया था जिसका वर्णन शब्दों के द्वारा करना काफी दुष्कर कार्य है। परंतु हम आपके समक्ष इसको प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। लाठी–डंडों और तलवारों से लैस ये उपद्रवी उग्रवादी सारे नियम कायदे कानूनों को दरकिनार कर अपने तांडव है मस्त है यहां तक कि पुलिस वालों और मीडिया कर्मियों को ट्रैक्टर द्वारा रौंदने का भी भरपूर प्रयास किया जा रहा था। हद तो तब हुई कि पुलिस की लाख रोकथाम करने के बाद भी भारी संख्या में एकत्रित ये आतंकवादी लाल किले पर पहुंच गए और भरपूर तोड फोड किया गया। काफी संख्या में यह कथित आंदोलनकारी लाल किले के अंदर भी घुस गए और सारी हदों को पार करते हुए लाल किले की प्राचीर पर चढघ्कर तिरंगे को अपमानित करते हुए खालिस्तान समर्थक और किसान संगठन के झंडों को फहराया गया। ग्रेटा थनबर्ग के द्वारा गलती से शेयर कर दिए गए टूलकिट ने जिसमें 26 जनवरी की घटना का संपूर्ण खाका तैयार था जिसे बाद में डिलीट कर दिया गया। परंतु तब तक विदेशी साजिश स्पष्ट हो चुकी थी। असल में योजना यह थी कि 26 जनवरी को उपद्रवियों द्वारा किए जा रहे दंगे को शांत करने के लिए पुलिस द्वारा की गई कार्यवाही को भारत की दमनकारी नीति के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा जिससे भारत सरकार को तानाशाह और दमनकारी विरूप में प्रचारित किया जा सके। पहले तो यह तथाकथित आंदोलनकारी किसान अपने मंच पर राजनीतिक पार्टियों के आने का विरोध कर रहे थे परंतु अब इससे भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं। यहां हम सबको यह सोचना होगा कि क्या सरकार के विरोध के नाम पर वोट बैंक की राजनीति का खेल खेलने वाले यह राजनीतिक दल मानसिक रूप से पूर्णतः दिवालिया तो नहीं हो गए? क्या कोई वोट या कुछ वोट राष्ट्रहित से ज्यादा हो सकते हैं? अगर ऐसा है तो क्या यह देशद्रोह नहीं? और यदि ऐसा लगता है कि हां या देशद्रोह है तो लगाम लगानी होगी हमें इस दूषित राजनीति पर, क्योंकि देश हित से बडा कोई धर्म नहीं। यह हमारा प्रथम कर्तव्य है। भारत सरकार को भी सोच समझकर कोई ऐसा कदम उठाना पडेगा कि आंदोलन के नाम पर देश के साथ हो रहे इस खिलवाडघ का समापन हो सके। कोई आंदोलन नहीं बल्कि विदेशी साजिश कर्ताओं का जमावडा है जो भारत को आगे बढते हुए नहीं देखना चाहते हैं और सदैव मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखना चाहते हैं।

संपादक
तरुण सिंह

किसान आन्दोलन

आंदोलन की आड़ में,
झोंके भाड़ किसान।
बीवी–बच्चे रो रहे,
और खेत–खलिहान।।

जिन्हें राष्ट्र की आन समझते,
जिन्हें राष्ट्र की शान समझते।
ऐसा बीज वो बो नहिं सकते,
वो किसान ये हो नहिं सकते।।

अब किस आन की देंइ दुहाई,
जिस किसान ने नाक कटाई।।
गद्दारों से जो मिल जाए,
कैसे वो किसान कहलाए।।

सबहि एक से लग रहे,
धूर्त – चंट – चालाक।
राजनीति रण्डी भई,
रजक लगा मुँह लॉक।।

राष्ट्र–द्रोह सम द्रोह नहिं,
राष्ट्र–प्रेम सम प्रेम।
रजक राष्ट्र–हित जो मिटे,
सजते घर–घर फ्रेम।।

ले किसान की आड़ भेड़िए,
चीख रहे सब खालिस्तानी।
दुहर गया यदि सन् पिचहत्तर,
माँग जाएंगे मुँह से पानी।।

हदें पार कर गया हरामी,
नजरों से गिर गया हरामी।
झूठा किया लाल का नारा,
किस कु–घड़ी में उसे उचारा।।

लोभी, लम्पट, लालची,
लुच्चे, लंठ, लबार।
राजनीति कौ करि रहे,
सब मिल बंटाधार।।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह,
संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

दिव्यमण्डलीय संगीत

झरनों की झरझर हो
या फिर, हो रिमझिम बरसात।
नदियों का कलकल निनाद,
या शीतल मंद सुवात।।
अपलक ही इन्हें, अनवरत निहारने को
व्याकुल हो उठता है मन।
जब मैं इनमें खो जाता हूँ,
और इन्हीं का हो जाता हूँ।
सचमुच, तब मैं,
मैं नहीं रहता,
कुछ और हो जाता हूँ।
जगत की सभी वाचालताओं से
बहुत दूर, कहीं खो जाता हूँ।।
क्योंकिद्
यही है वह स्वर्गीय संगीत !
दिव्यमण्डलीय संगीत !!
जो मेरे मन में भर देता है,
सृष्टि के कण–कण के प्रति प्रेम।
जिसका अनुभव मैं करता हूँद्
अपने रक्त के संचार में,
आचार और विचार में।
अपनी श्वासों के उच्छ्वास में,
देह की सुवास में।।
हृदय की धड़कन में,
जिगर की तड़पन में।
नाड़ियों की गति में,
लय और यति में।
और गात्र–वीणा के
समस्त देह–व्यवहार में।।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक

ऋतुराज – बसंत

हमारा भारत ऋतू, त्योहारों और उत्सव का देश है हमारे ऋषि–मुनियों ने पूरे वर्ष को छह ऋतु में विभाजित किया जिसमे वसंत ऋतू , ग्रीष्म ऋतू , वर्षा ऋतू , शरद ऋतू , हेमंत ऋतू और शिशिर ऋतू शामिल हैं।इस सभी ऋतूओ में से वसंत को सभी ऋतूओ का राजा माना जाता है , इसी कारण इस दिन को बसंत पंचमी कहा जाता है तथा इसी दिन से बसंत ऋतु की शुरुआत होती है बसंत पंचमी हमारा प्रमुख त्यौहार है । बसंत पचमी को श्री पंचमी और ज्ञान पंचमी भी कहा जाता है । यह त्यौहार माघ के महीने में शुक्ल पंचमी के दिन मनाया जाता है द्यइस ऋतु में खेतों में फसले लहलहा उठती है और फूल खिलने लगते है एवम् हर जगह खुशहाली नजर आती है ठंड के बाद प्रकृति की छटा देखते ही बनती है इस मौसम में खेतों में सरसों की फसल पीले फूलों के साथ , आम के पेडद्य पर आए फूल , चारों तरफ हरियाली और गुलाबी ठण्ड मौसम को और भी खुशनुमा बना देती है , यदि सेहत की दृष्टि से देखा जाए तो यह मौसम बहुत अच्छा होता है इंसानों के साथ–साथ पशु पक्षियों में नई चेतना का संचार होता है ,तथा धरती पर सोना उगता है अर्थात धरती पर फसल लहलहाती है । इस दिन माता सरस्वती का जन्म हुआ था इसलिए बसंत पचमी के दिन सरस्वती माता की विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। माँ सरस्वती को विद्या एवम् बुद्धि की देवी माना जाता है द्य बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती से विद्या, बुद्धि, कला एवं ज्ञान का वरदान मांगा जाता है ।

पौराणिक कथा के अनुसार सृष्टि रचियता भगवान ब्रह्मा ने जीवो और मनुष्यों की रचना की तथा जब वे संसार में देखते हैं तो उन्हें चारों ओर सुनसान निर्जन ही दिखाई देता है एवम् वातावरण बिलकुल शांत लगता है जैसे किसी की वाणी ना हो द्य यह सब करने के बाद भी ब्रह्मा जी मायूस , उदास और संतुष्ट नहीं थे द्य तब ब्रह्मा जी भगवान् विष्णु जी से अनुमति लेकर अपने कमंडल से जल पृथ्वी पर छिडकते है द्य कमंडल से धरती पर गिरने वाले जल से पृथ्वी पर कंपन होने लगता है और एक अद्भुत शक्ति के रूप में चतुर्भुजी(चार भुजाओं वाली) सुंदर स्त्री प्रकट होती है ।उस देवी के एक हाथ में वीणा और दुसरे हाथ में वर मुद्रा होती है बाकी अन्य हाथ में पुस्तक और माला थी द्य ब्रह्मा जी उस स्त्री से वीणा बजाने का अनुरोध करते है द्य देवी के वीणा बजाने से संसार के सभी जीव–जंतुओ को वाणी प्राप्त को जाती है द्य उस पल के बाद से देवी को "सरस्वती" कहा गया द्य उस देवी ने वाणी के साथ–साथ विद्या और बुद्धि भी दी इसलिए बसंत पंचमी के दिन घर में सरस्वती की पूजा भी की जाती है द्य अर्थात दुसरे शब्दों में बसंत पंचमी का दूसरा नाम "सरस्वती पूजा" भी है द्य देवी सरस्वती को बागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है ।

अभय सिंह

(62 बनाम 26 कहीं सोची–समझी चाल तो नहीं???)

बहकावे में न आवें भोले–भाले किसान
राष्ट्र–विरोधी अंतरराष्ट्रीय साजिश को पहचानें

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक

72 वें गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2021) जैसे पवित्र राष्ट्रीय पर्व पर किसान आंदोलन के नाम पर देश की राजधानी दिल्ली में जो कुछ भी घटा, मुझे बार–बार सोचने को विवश कर रहा है कि यह किसान–आंदोलन की आड़ में कहीं कोई बड़ी साजिश तो नहीं रची गई? सच कहूँ तो यह मुझे अपना कोरा भ्रम नहीं लगता, बल्कि शत–प्रतिशत सचाई दिखती है इसमें।इस देश के कोटि–कोटि जन–मानस में अपने अन्नदाता किसानों के प्रति भी ठीक उतना ही प्यार और सम्मान है जितना कि हर प्रतिकूल मौसम में भी रात–दिन देश की रक्षार्थ सीमा पर डटे रहने वाले प्रहरियों के लिए। हमारे यहाँ किसान को अन्नदाता कहा जाता है। दूसरा भगवान् समझा जाता है। उसकी महती भूमिका को कोई भी न अस्वीकार कर सकता है और न कमतर आंक सकता है। आंकना भी नहीं चाहिए। जीवन जीने के लिए दो जून की रोटी आखिर किसको नहीं चाहिए? अस्तु।

अव्वल तो किसान बिल निःसन्देह उनके हित में ही सरकार ला रही है किन्तु फिर भी यदि उनको इसमें कहीं अपना अहित दिख रहा है अथवा विरोधियों द्वारा बरगलाकर या भड़काकर उकसाया जा रहा है, तब भी उनको इसे शान्तिपूर्ण ढंग से करना चाहिए और शान्तिपूर्ण चल भी रहा था। अपने हक के लिए आन्दोलन करना कोई बुरी बात नहीं। हो सकता है कि मेरी अल्प–बुद्धि किसानों की उस परेशानी को न समझ पा रही हो जिससे कि वे बुरी तरह चिंतित हैं। मैं इस पचड़े में पड़ना भी नहीं चाहता। फिर भी बहुत सारे प्रश्न इस आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में उभरकर मेरे जेहन में आते अवश्य हैं। मेरे ही नहीं, हर किसी देशवासी के मन में आ रहे होंगे।

मेरे ये प्रश्न कुछ इस प्रकार हैं

1–क्या 26 जनवरी से 62 दिन पूर्व आन्दोलन प्रारम्भ करवाने के पीछे किसानों को भड़काने वाली शक्तियों का हाथ तो नहीं था? ध्यातव्य है कि 62 और 26 आपस में उल्टी संख्याएँ हैं।

2–यदि ऐसा नहीं था तो ट्रैक्टर रैली निकालने के लिए इतनी मारामारी क्यों की गई?

3–फिर इजाजत मिलने के बाद जो समय निर्धारित किया गया था, उससे पहले ही जमावड़े क्यों जमा लिए किसानों की आड़ में देशद्रोहियों ने?

4–समय से पूर्व तो बैरीकेटिंग मिलनी ही थीं। यदि गलत मंशा नहीं थी तो उन बैरीकेटिंग्स को बैरी (दुश्मन या बाधा) क्यों मान लिया गया?

5–बैरीकेटिंग्स को जबरन उखाड़ना व तोड़ना और पुलिस व सेना के जवानों पर दौड़ा–दौड़ाकर हमला करना क्या पूर्व निर्धारित रणनीति का हिस्सा नहीं था?

6–क्या उपद्रवी उस दिन गणतंत्र दिवस पर भारतीय वीरों के कारनामे देखकर इतने उत्साहित हो गए थे कि अपने ही जवानों को दुश्मन मान उन पर लाठी, डंडों और तलवारों से हमला कर वे भी करतब दिखा रहे थे?

7–क्या देश का किसान ऐसा कभी कर सकता है या करने की सपने में भी सोच सकता है?

8–क्या भारतीय किसानों द्वारा इतनी उद्दंडता के प्रदर्शन और राष्ट्र–विरोधी कृत्य की कल्पना की जा सकती है?

9–क्या आईटीओ चौराहे पर ट्रैक्टरों के माध्यम से पुलिस व सेना के जवानों को दौड़ा–दौड़ाकर उन पर लाठी, डंडों व तलवारों से हमला करना पूर्व सुनियोजित एजेंडा में शामिल नहीं था?

10–क्या डीटीसी व पुलिस की बसों को ट्रैक्टरों से धक्के मार–मारकर तोड़ने वाले चालक ट्रेंड उग्रवादी या आतंकवादी नहीं थे?

11–क्या राष्ट्रीय सम्पत्ति को हानि पहुँचाने का कार्य असंवैधानिक नहीं था?

12–क्या नांगलोई में इकट्ठे हजारों नांग (सर्प) स्वरूप नंगों का नंग–नांच शोभनीय था?

13–क्या लाल किले को लाल (खूनी) किला बनाने के कुत्सित प्रयास नहीं किए गए तथाकथित किसानों द्वारा?

14–क्या लाल किले के अंदर और बाहर की गई तोड़–फोड़, जिसमें कि झांकी में प्रदर्शन के बाद वहाँ लाल किला परिसर में खड़ी सेना की झांकी और श्रीराम मंदिर की झांकी तक को क्षति पहुँचाने की कार्यवाही पूर्व सुनियोजित कार्यवाही का हिस्सा नहीं थी?

15–क्या लाल किले पर पुलिस के साथ की गई बर्बरतापूर्ण कार्यवाही, जिसमें कि उन पर अचानक हमला बोल दिया गया और उन्हें जान से मारने की नीयत से ऊपर से नीचे फेंका गया अथवा उनको जान बचाने के लिए स्वयं भी कई–कई मंजिल की ऊँचाई से खाइयों में कूदना पड़ा, किसानों के द्वारा किया गया कुकृत्य था?

16–क्या लाल किले की प्राचीर से तिरंगे को नीचे फेंकने वाले निहंग सिख को किसान कहा जा सकता है?

17–क्या कोई भी सच्चा सिख, जिसने गुरु नानक देव से लेकर अपने सीस की भी परवाह न करने वाले गुरु तेगबहादुर और अपने चारों सुतों (पुत्रों) को हिन्दू धर्म और मातृभूमि की रक्षार्थ कुर्बान कर देने वाले दशम् और अन्तिम गुरु गोविंद सिंह या उनके परम् अनुयायी वीर बन्दा बहादुर से प्रेरणा पाई हो, ऐसा घिनौना व कुकृत्य कर सकता है?

18–क्या ऐसी गन्दी सोच वाला वह सिख कोई किसान न होकर खालिस्तान समर्थक कोई विद्रोही नहीं था?

19–क्या उस आतंकवादी द्वारा राष्ट्र की अस्मिता और गौरव के प्रतीक तिरंगे को हटाकर अपना मजहबी ध्वज फहराने का कार्य असंवैधानिक नहीं था?

20–क्या यह कहकर पल्ला झाड़ लेना कि उसमें किसी विशेष राजनीतिक दल के अथवा बीजेपी के गुंडे किसानों के वेश में घुसकर यह सब कर गए तो इसकी भी गहराई से जाँच कराकर उनको सजा नहीं मिलनी चाहिए?

21–क्या इस देश के किसानों के लाल भारतीय सेना में नहीं हैं अथवा वे अपने कलेजे के टुकड़ों को देश की रक्षा के लिए समय–समय पर शहीद होते नहीं देखते?

22–क्या हर सच्चे सिख भाई को भी सिख के वेश वाले उस भेड़िए से नफरत नहीं हो रही है और घिन नहीं आ रही है जिसने राष्ट्र की अस्मिता के साथ खिलवाड़ किया।

23–क्या उसे इस जगन्य अपराध के लिए कठोरतम दंड नहीं मिलना चाहिए? मैं तो कहता हूँ की उसे अविलम्ब सजा–ए–मौत मिलनी चाहिए।

24–क्या किसी भी देशद्रोही को, चाहे वह कोई भी हो और कहीं का भी हो, कभी बख्शा जाना चाहिए?

25–जब सेना तक में किसी को भी गद्दारी करने पर नहीं छोड़ा जाता या उसको कोर्ट मार्शल तक की सजा दी जा सकती है तो फिर राष्ट्र के प्रति विद्रोह करने वाले किसी अन्य को ऐसी सजा क्यों नहीं दी जा सकती?

26–क्या जिन लोगों ने भी किसी कौम को या राजनीतिक दल को अथवा किसानों को बदनाम करने की साजिश रची हो, उनको उसकी कड़ी–से–कड़ी सजा नहीं मिलनी चाहिए? फिर चाहे वे देशद्रोही नेता या किसान के रूप में ही क्यों न हों?

सच तो यह है कि कनाडा, पाकिस्तान और चीन जैसे देशों की शह पर भारत की अस्मिता से खिलवाड़ किया गया। इस आंदोलन की आड़ में यहाँ के सरकार विरोधी सभी राजनीतिक दलों के सहयोग से किसान यूनियन के नाम पर बिक चुके चंद तथाकथित नेताओं पर अकूत संपत्ति लुटाकर व किसानों को तात्कालिक संरक्षण देकर उनको बरगलाकर व उकसाकर यह कार्यवाही की गई। असल में वे सब यही चाहते हैं कि यदि सरकार किसान बिल को वापस ले लेती है तो आगे 370 और 35–A जैसे कानूनों पर भी वह सरकार को मुसीबत में डाल सकें। उनकी इस गलत मंशा को विरोधी दल तूल दे रहे हैं ताकि अच्छी–भली चलती सरकार के आगे रोड़े खड़े किए जा सकें। राजनीति इस कदर भी गन्दी हो सकती है और राजनीतिक सफेद पोश चेहरे इतने भी घटिया स्तर तक उतर सकते हैं, यह देख अन्तरात्मा कांप उठती है।फिर कहना चाहूँगा कि दोषियों को दंड अवश्य मिलना चाहिए, चाहे वे किसी भी राजनीतिक दल से जुड़े क्यों न हों?

माननीय प्रधानमंत्री महोदय से भी प्रार्थना है कि–
सरक–सरककर ना चले,
अब भारत सरकार।
काम असरकारी करे,
इसमें ही है सार।।
इसमें ही है सार, सर
उठाएँ जो कमीने।
कर सबके सर कलम,
चीर दो सबके सीने।।
जीने का हक नहीं है,
ऐसे गद्दारों को।
रजक सजा हो सभी धूर्त
अरु मक्कारों को।।

भारत माता सबको सद्बुद्धि दें ऐसी कामना करता हूँ।

वृन्दावन कुम्भ की प्राचीन परम्परा से न रहें अनभिज्ञ

वसंत पंचमी से प्रारम्भ वृन्दावन कुम्भ पर विशेष

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भ–पर्व की बात करने से पहले मैं ब्रज की चर्चा करना चाहूँगा। वस्तुतः भौगोलिक दृष्टिकोण से ब्रज को भले ही चौरासी कोस में सिमटा एक क्षेत्र माना जाता हो किन्तु ब्रज कोई स्थान विशेष ही नहीं अपितु एक भाव हैय बल्कि मैं तो कहता हूँ कि महाभाव है। अपनी शस्य–श्यामला भारत–भूमि भी भाव में रत एक ऐसी अति प्राचीन सिद्ध–भूमि है जिसकी महनीयता का बखान जितना हम भारतवासियों ने नहीं किया, उससे कहीं अधिक बढ़कर विदेशियों ने भी किया है। यह बात अलग है कि उनमें से अधिसंख्य की दृष्टि उससे सब कुछ पाकर भी उसे उजाड़ने की ही अधिक रही। विदेशी आक्रान्ताओं को यह भलीभाँति ज्ञात था कि ब्रज में भारत की आत्मा रमण करती है।यदि ब्रज के मन्दिर, यहाँ का स्थापत्य, साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति को तहस–नहस कर दिया जाए तो भारत को कमजोर किया जा सकता है। कारण, जिस राष्ट्र की कला और संस्कृति को ही तहस–नहस कर दिया जाएगा, वहाँ फिर बचेगा ही क्या? यही कारण रहा कि बार–बार ब्रज के मन्दिरों को तोड़ा गया, मूर्तियों को नष्ट अथवा खण्डित किया गया, साहित्य को जला दिया गया अथवा लूटकर ले जाया गया। और यही क्या, यहाँ के भोले–भाले और अहर्निश जगत के कल्याण की कामना करने वाले नर–नारियों और दुधमुँहे बच्चों तक के सर कलम कर लहू की नदियाँ बहाई गईं। पर वाह री ब्रज–वसुन्धरा! तू बार–बार अपना सांगोपांग नष्ट–भ्रष्ट होने के बाद भी कभी टूटी नहीं अपितु हर बार नए रंग–रूप में अपने आप को सजा–सँवारकर खड़ा करती रही और ललकारती रही उन आक्रान्ताओं को, जिनकी सदैव कुदृष्टि रही तेरे ऊपर। दरअसल ये आक्रांता हमसे भी अधिक अच्छी तरह से समझते थे इस बात को कि भारतीय संस्कृति के मूल में यही ब्रज–संस्कृति है। इस महनीय भारतीय संस्कृति को हम कृष्ण–संस्कृति भी कह सकते हैं। ब्रज और श्रीकृष्ण में कोई भेद नहीं है। इन्हें एक–दूसरे का पर्याय समझना चाहिए। श्रीकृष्ण, जिन्हें हम परमपिता परमेश्वर के परमावतार के रूप में जानते और मानते हैं, वे षोडश कलावतार हैं। वे योगी भी हैं और भोगी भी। योद्धा भी हैं और शान्ति के संदेशवाहक भी। वे माखनचुरैया भी हैं एवं रास–रचौया और वंशीबजैया भी। वे गीतोपदेशक के रूप में समस्त जगत को सांख्य योग और कर्मयोग के श्रेष्ठतम शिक्षक भी हैं। यही कारण है कि वे न केवल ब्रज में वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष में सर्वाधिक पूजनीय हैं। देश ही क्या, सारा विश्व उनसे प्रभावित है। आज विश्वभर में उनके मन्दिर भी हैं और कोटि–कोटि आराधक भी। अस्तु। अब बात करते हैं कुम्भ की। देशभर में चार प्रमुख सीलों पर आयोजित होने वाले कुम्भ के आयोजन भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता के दर्शन कराने वाले अनूठे महापर्व हैं। प्रति द्वादश वर्षोपरांत हरिद्वार कुम्भ से पूर्व वसंत से होलीपर्यंत कल्पवास कर पुण्य–लाभ अर्जित करने का पर्व है श्रीधाम वृन्दावन का यह कुम्भ–पर्व, जिसे कुम्भी और बैठक जैसे नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व है आस्था और विश्वास का, और साथ ही साथ अमरत्त्व की प्राप्ति की कामना का। कुछ लोग इस पर्व की प्रामाणिकता पर प्रश्न–चिह्न लगाते हुए अनेक ऐसी बातें कह देते हैं जो कि ब्रजवासियों को ही नहीं, ब्रज–रस में बूड़े (डूबे) हर किसी के मन को उद्वेलित कर देती हैं। यद्यपि ब्रज के अनेकानेक संत –महात्मागण इस सम्बंध में अनेक बार सप्रमाण यह सिद्ध कर चुके हैं कि वृन्दावन कुम्भ मेले की अवधारणा कोई नई नहीं है इसके मनाए जाने के एक नहीं, अनेक शास्त्रोक्त प्रमाण हैं जो कि यह सिद्ध करते हैं कि वृन्दावन कुम्भ की परम्परा कोई सौ–दो सौ या पाँच सौ वर्ष से ही नहीं बल्कि अत्यन्त प्राचीन है। इस विषय पर एक नहीं, अनेकानेक लेख तो संतों व महापुरुषों तथा विद्वानों के हमारे भी पढ़ने में आए हैं। अतः उनकी चर्चा मैं यहाँ नहीं करूँगा। इस विषय पर प्रचुर सामग्री श्रीधाम वृन्दावन कुम्भ मेला की स्मारिकाओं में भी देखी जा सकती है। हाँ, यह बात अवश्य है कि इस विषय पर अभी शोधकर्ताओं और अध्येताओं के द्वारा भी बहुत कुछ खोजबीन की जा सकती है।शोधार्थीगण और अध्येता इस विषय पर यह सोचकर भी चिंतन–मनन कर सकते हैं कि जिस ब्रज में सारे तीर्थों का वास माना जाता है, वह तीर्थ सनातन संस्कृति के

(पृष्ठ–4 का शेष भाग)

अद्भुत और अनूठे कुम्भ जैसे महामहोत्सव से कैसे अछूता रह सकता है? सम्भवतया इस दृष्टि से खोजबीन करते हुए अध्येतागण और भी महत्त्वपूर्ण सामग्री सबके सामने ला सकेंगे। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि जो लोग इस विषय पर अनर्गल प्रलाप या टीका–टिप्पणी करते हैं उनके ऊपर पड़े असत्य के आवरण को भी हटाया जा सकेगा और इस मेले को और भी अधिक भव्यता प्रदान की सकेगी।मेरी दृष्टि में श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भ मेला को सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया जा सकता है।

ब्रज–भूमि तीन लोकों से न्यारी–प्यारी मानी जाती है। तीन लोक से न्यारी मथुरा जैसी पंक्तियाँ अनेक लोकगीतों में भी आती है।

सनातन संस्कृति की जड़ें ब्रज –क्षेत्र में बहुत गहराई तक समाई हुई हैं। ब्रज की शोभा, यहाँ का अप्रतिम सौंदर्य, यहाँ की गौओं और कालिंदी की निर्मलता ने कभी स्वर्ग से भी सुन्दर दृश्य इस भूमि पर उपस्थित किए हैं। सम्भवतया यही कारण रहा होगा कि भगवान् श्रीकृष्ण ने पूर्ण परमावतार के रूप में आने के लिए इसी भव्य–दिव्य भूमि का चयन किया। यही नहीं, वे स्वयं ही यहाँ अवतरित नहीं हुए बल्कि अपने सम्पूर्ण परिकर के साथ अवतरित हुए, ताकि पुण्य सलिला भारत–भूमि को विभिन्न रूपों में बसे दैत्यों और दानवों तथा नराधमों के आतंक से मुक्त कर सकें और अपनी माधुर्यमयी रासलीलाओं में माध्यम से रसाप्लावित कर यहाँ के जन–जन को परमानन्द प्रदान कर सकें। भगवान् श्रीकृष्ण ने किया भी वही। यही कारण है कि ब्रज–संस्कृति भारतीय मनीषा का चरम बिंदु है। बिना ब्रज या कृष्ण को समझे भारतीय मनीषा को नहीं समझा जा सकता। चाहे काव्य की दृष्टि से देखें अथवा साहित्य की दृष्टि से, संगीत की दृष्टि से देखें अथवा कला की दृष्टि से या कहें कि समग्र सांस्कृतिक दृष्टि सेय गहनता से चिंतन–मनन करके यदि देखा जाए तो जो कुछ भी ब्रज में व्याप्त है, समष्टि में उससे इतर कुछ भी नहीं या यों कहें कि जो कुछ भी समस्त सृष्टि में व्याप्त है वह ब्रज में सहज ही उपलब्ध है।ब्रज–भूमि तो वह रस–भूमि है, जहाँ से प्रेम का सूत्रपात हुआ है। श्रीकृष्ण ने यदि प्रेमामृत की ऐसी रस–वृष्टि यहाँ न की होती तो सम्भवतया मुक्ति को भी अपनी मुक्ति का मार्ग इस पावन–स्थली की रज में न मिलता। यथा– मुक्ति कहे गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय। ब्रज–रज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय।।

यहाँ का तो पावन यमुना–जल ही अमृत तुल्य नहीं है, यहाँ की रज भी अमृतमयी है। ब्रज को बार–बार रक्तरंजित करने वाले इतिहास के पृष्ठों को पलटकर यदि देखें तो जितनी बार भी ब्रज–वसुन्धरा को उजाड़ने के प्रयास हुए, उतनी ही बार श्रीकृष्ण के सखा स्वरूप ब्रजवासियों ने बाँए हाथ के खेल समझ उसकी ठीक वैसे ही रक्षा कर ली, जैसे कि श्री गोवर्धन गिरिराज को स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने बाँए हाथ की कन्नी उँगली पर धारण कर ब्रज और ब्रजवासियों की इन्द्र के भयंकर क्रोध से रक्षा की।

ऋषि–मुनियों व तपस्वियों के कारण ही नहींय काव्य, साहित्य, संगीत और कला की दृष्टि से भी विश्वभर में अपनी अनूठी पहचान रखने वाली ब्रज–भूमि आज भी काव्य, साहित्य, संगीत और कला की दृष्टि से अपनी पुरातन परम्परा को अक्षुण्ण बनाए हुए है। इसे बनाए रखने में यहाँ के संस्कृतिकर्मियों की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। यदि वृन्दावन धाम के कुम्भ के इस आयोजन को और अधिक आकर्षक बनाने हेतु शासन–प्रशासन ब्रज के संस्कृतिकर्मियों व कलाकारों से सुझाव और सहयोग ले तो इसे और भी अधिक भव्य–दिव्य स्वरूप दिया का सकता है। इसी प्रकार ब्रज के संत–महात्माओं के मार्गदर्शन में इस कुम्भ की महत्ता से सम्बन्धित शास्त्रोक्त प्रमाणों के स्लोगन स्थान–स्थान पर लगाए जाएँ अथवा किसी पांडाल विशेष में उनकी प्रदर्शनी लगाई जाए तो यहाँ आने वाले भक्तों, श्रद्धालुओं और सांस्कृतिक अध्येताओं को और अधिक आकर्षित किया जा सकता है, जो ब्रजवासियों को हर दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होगा।

हमारे वृन्दावन कुम्भ को समुचित स्थान मिले, इसकी महत्ता से आम–जन को परिचित कराया जाए, इसको अधिकाधिक आकर्षक और वृहद् मेले का स्वरूप प्राप्त हो, देशी–विदेशी सैलानी यहाँ आकर इसका धार्मिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से आनन्द उठाएँ तकि पर्यटन की दृष्टि से भी इस क्षेत्र को बढ़ावा मिले, यहाँ की जनता को रोजगार के अवसर भी मिलें और श्रीवृन्दावन धाम का यह महनीय आयोजन महामहोत्सव के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्याति को प्राप्त हो, इसी मंगलमयी कामना के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

जय श्री राधे! जय श्री वृन्दावन धाम!!

संगीत–सदन
एल आई जी–94,
महावि□ा कॉलोनी (द्वितीय चरण)
मथुरा–281001 (उ.प्र.)
मो. 9897247880
8851402815
ई–मेल: rkagrawal19256@gmail-com

HOW TO INVEST IN MUTUAL FUND PLANS

Mutual fund investments were an unfamiliar form of investment to a large number of Indian investors just a couple of decades ago. But the situation today is quite different. With a steady rise in mutual fund investors in India year after year, mutual funds, today, are viewed as a simple and easy way to invest that could help build wealth.

So, if you are wondering where to begin with mutual funds, here's everything you need to know.

What is a mutual fund

A mutual fund is an investment product that pools money from a group of investors to purchase different securities. However, most people regard a mutual fund as an investment avenue. In reality, you can invest in various financial securities like stocks, bonds, gold and money market instruments through an investment vehicle.

How do mutual funds work?

A mutual fund is essentially a trust that collects money from several like-minded investors. Asset Management Companies (AMCs) manage and operate many mutual fund schemes. Each scheme has a specific investment objective catering to distinct investment needs.

Based on the fund's objective, the money collected from investors is placed in various avenues such as stocks, gold, bonds and other securities. A finance professional known as a fund manager whose goal is to earn optimum returns on the fund's investments oversees each fund. The income generated by the fund is divided and distributed among the investors proportionately.

Benefits of investing in mutual funds

1) Professional expertise

When you invest in a mutual fund, a professional fund manager handles your investments. A team of researchers who track the market on a real-time basis supports every fund manager. Based on their inputs, fund managers make necessary changes to your mutual fund portfolio to maximize returns. This option can become a suitable option for salaried people (and business owners) who do not have the time to track markets or make timely investments.

2) Convenience

Investing in mutual funds can be a hassle-free and straightforward exercise. The entire process is paperless, and you can complete it from the comfort of your home. And once you begin your investment journey, you can follow your holdings and make necessary adjustments, if needed, through your computer or smartphone.

3) Begin with small investments

Many people assume you can only invest in mutual funds if you have a large sum of money. In reality, you can begin investing with just Rs. 500 per month. A Systematic Investment Plan (SIP) can help you invest small amounts regularly. And if your income rises over time, you can also increase your SIP allocation. This way, you not only lower your investment costs but also benefit from the power of compounding.

4) Diversification

Diversifying your portfolio is vital if you are looking to minimize your exposure to risk and loss. An adequately diversified portfolio can weather the poor performance of a single stock or sector, thus cushioning your total investments. Mutual funds are designed in a way to provide adequate diversification.

For instance, a mutual fund that tracks the S&P BSE 100 index could open your investment to as many as 100 securities in a single fund. This can be a simple and cost-effective way of diversifying your portfolio.

5) Tax benefits

Section 80C of the Income Tax Act provides tax deductions on investments made in specific financial instruments. This includes mutual funds too.

Currently, you can claim a tax benefit of up to Rs. 1.5 lakh per year in Equity Linked Saving Scheme (ELSS) that offer one of the shortest lock-in period.

Source: - www.franklintempletonindia.com

Mrigaashree
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

मां सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।1।।

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामा□ां जगद्व्यापिनीं
वीणा–पुस्तक–धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।2।।

माँ से कामना

शस्य श्यामला हे भारत माँ!
तेरी छवि अभिराम।
नजर लगी ऐसी क्या तुझको,
लाल बिकें ले दाम।।
लाल बिकें ले दाम,
निकरतीं मुख से गारी।
सनातनी कछु घर से
जन्मे जो अंसारी।।
रजक दिखे नहिं माता,
अब एकहु अंसारी।
बस जावें सब पाक,
पुनः बन जायं भिखारी।।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल रजक

वसंत की आत्मा

फिर वसंत की आत्मा आई,
मिटे प्रतीक्षा के दुर्वह क्षण,
अभिवादन करता भू का मन!
दीप्त दिशाओं के वातायन,
प्रीति सा स–सा मलय समीरण,
चंचल नील, नवल भू यौवन,
फिर वसंत की आत्मा आई,
आम्र मौर में गूंथ स्वर्ण कण,
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन!
देख चुका मन कितने पतझर,
ग्रीष्म शरद, हिम पावस सुंदर,
ऋतुओं की ऋतु यह कुसुमाकर,
फिर वसंत की आत्मा आई,
विरह मिलन के खुले प्रीति व्रण,
स्वप्नों से शोभा प्ररोह मन !
सब युग सब ऋतु थीं आयोजन,
तुम आओगी वे थीं साधन,
तुम्हें भूल कहते ही कब क्षण?
फिर वसंत की आत्मा आई,
देव, हुआ फिर नवल युगागम,
स्वर्ग धरा का सफल समागम !

सुमित्रानंदन पंत

समृद्ध भारत वसुंधरा

झाँकी

तपोवन उत्तराखंड में आयी प्राकृतिक आपदा के कुछ चित्र